अम्बेडकर को हल्के में समझना नादानी होगी

डॉ डी एन प्रसाद

प्राध्यापक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)
मो. 09420063304

अम्बेडकर! बंधुत्व के बंधनकर्त्ता; अम्बेडकर! समता के समन्वयकार; अम्बेडकर! न्याय के न्यायाधीश, इस त्रिआयामी सामाजिक समरसता के सेनानी को इतिहास ने न्याय तो दिया, परंतु हिक़ारत की निगाह से! नतीजतन आज के बदलते परिदृश्य में मुख्यधारा में होते हुए भी नजरों की निगाह से ओझल हैं। इसका कारण है - एक तो सामंती नज़र और दूसरा अम्बेडकरवादियों का अम्बेडकर की विचारधारा से विलग प्रतिरोध नहीं, प्रतिशोध की निगाह! यह वही कारण है कि जिस कारण कोई महान विचारधारा या कोई महान व्यक्तित्व समाज की सम्पूर्ण इकाई से कट जाता है और सिर्फ एकल इकाई का प्रतिमान बनकर एक खास घेरे में या एक खास बंधन में बंधकर सिमट जाता है, ऐसी स्थिति बाकी के समाज से उसे विलग कर देती है, फिर वहां वह समाज हिक़ारत में प्रतिशोधी बन जाता है जो मानवता के लिए हितकारी नहीं होता.....!

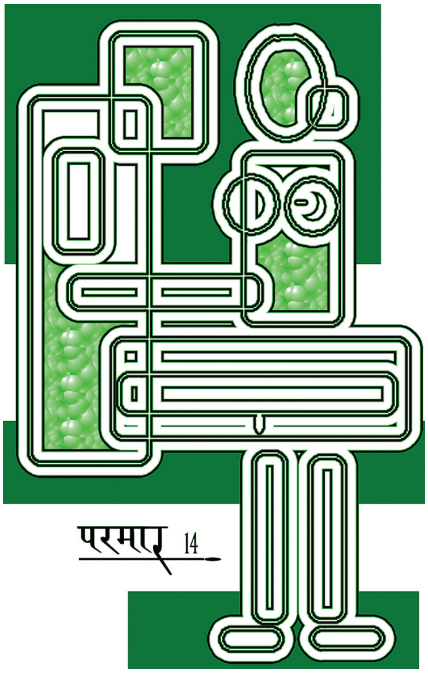

बहरहाल, ऐसी और इस स्थिति ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे प्रबुध्द विचारक, समरस समाज के पुरोधा और मानवीय कल्याण के कारक को बहुआयामी भारतीय समाज में तन्हा कर दिया। सुशासन के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सम्पूर्ण सामाजिक विकास के सरोकारी प्रावधानों से भारतीय बहुआयामी समाज वंचित रह गया। अभी हाल के वर्षों में डॉ. भीमराव की 125 वीं जयंती वर्ष में भी कोई परिवर्त्तनकारी लक्ष्य नहीं दिखा। ध्यातव्य हो कि कोई भी विचारधारा एकांगी होकर सम्पूर्ण समाज में पल्लवित नहीं होती। ऐसे संक्रमण काल में दिल्ली से प्रकाशित युवा संवाद मासिक पत्रिका का दिसम्बर 2017 का अम्बेडकर विशेषांक इस माने में सफल है क्योंकि इस अंक के संयोजन में अम्बेडकर के सर्वांग को समेटने की पुरजोर कोशिश की गई है जिसमें उनके सामाजिक संघर्ष, पत्रकारिता, स्त्रीअधिकारिता, पुरजोर जातिगत अस्तित्व का संघर्ष एवं राष्ट्र-निर्माण की समस्या पर विमर्शित विचार उल्लेखनीय हैं।

अभी हाल के वर्षों में डॉ. भीमराव की 125 वीं जयंती वर्ष में भी कोई परिवर्त्तनकारी लक्ष्य नहीं दिखा। ध्यातव्य हो कि कोई भी विचारधारा एकांगी होकर सम्पूर्ण समाज में पल्लवित नहीं होती। ऐसे संक्रमण काल में दिल्ली से प्रकाशित युवा संवाद मासिक पत्रिका का दिसम्बर 2017 का अम्बेडकर विशेषांक इस माने में सफल है क्योंकि इस अंक के संयोजन में अम्बेडकर के सर्वांग को समेटने की पुरजोर कोशिश की गई है जिसमें उनके सामाजिक संघर्ष, पत्रकारिता, स्त्रीअधिकारिता, पुरजोर जातिगत अस्तित्व का संघर्ष एवं राष्ट्र-निर्माण की समस्या पर विमर्शित विचार उल्लेखनीय हैं।

एमबीबीएस चिकित्सक डॉ. निखिल डोरले का दीक्षाभूमि, नागपुर से चैत्यभूमि, मुंबई का उनका बाइक से सफर दिलचस्प है जिसमें मूकनायक से महानायक, बहिष्कृत भारत से प्रबुध्द भारत तथा विधि-लेखन से संविधान लेखन तक को रचनेवाले महामानव की उत्कर्ष भूमि की परिवर्तनयात्रा का बोध सहज हो जाता है, और पाठक को भी इस यात्रा का यात्री बनाने का उत्साह परिबोधित करता है। वहीं जीवनी लेखन के कुहासा में प्राध्यापक संदीप मधुकर सपकाले ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के प्रथम जीवनी लेखक बाबा साहेब के समकालीन तानाजी बालाजी खरावतेकर की चर्चा की है। 'डॉ. अम्बेडकर' शीर्षक से उस 26 वर्षीय युवालेखक